

A.C. Joshi Library  
P.U. Chandigarh

MSS No. 75 Subject

Name of MSS ~~Kavya~~ KAVYA : SANSKRIT - HINDI RUPANITARAN

Author —

Period — Folios

Script SANSKRIT Source

Missing Folios

(14/11)  
Sanskrit Translation of Sanskrit work.  
No: 122

A. no. 75

سلسلہ کائنات بان

वैष्णव कारनाम मिलसित

ज्ञान नयामैमा जगतः गुणस्य

मिली तिसमैरीके जगत्श्री रसीका समेत

در طبقہ معنی این گاہ

रतवकः मैने इ हरगा

प्रमिमतः पतत यदि

यस्मान्नगद्गुणवस्थानयामै  
शासंगतासद्गतास्ते यदीयं  
परेशवैभवस्तम्भानां पार्थिवा  
नां संघाते प्राउर्भवेत् ॥

भाषार्थ

जिस कारण ते जगत्श्री रसीका  
रत्न तिजाम तिसमैरीके समेत मि  
ली मिली है परमेश्वर के वार्गीह के  
प्रभुम्होये गजे लोक है न तिके नरे

Sanskrit  
851  
K. 21  
(75-11)



अनद	वार्गादिज	असानीनि	
	वरुत		
भवेत्	संति	परेशवैभ	सम्माः
		वस्य	
कटहोगा	हेन	परमेश्वरके	असम्भ
		वार्गादके	

برکات و شجہ حسانت حال ما

समान	हसनात	वसुनतिनि	वरकान
कहय	पदार्थाना	लाभदाव	समूहेः
म			
कों	पदार्थोंका	अरुलाभ	दोलतके
	देनेवाला		

तदासमृद्धिलाभदाय  
नीलोकोभयपदार्थला  
भदावभवितंशक्रोति

### भाषार्थ

तद्वत्तददोलतकेलाभदेनेवाली  
अरुदोनोंलोकों के अर्थात् तददोलो  
क अरुसर्गलोकके पदार्थों का  
लाभदेने वालीभी होनेको सकती  
है ॥



الوقف نفوس و منوف

वसन्ति	नरुस	अनुरि
वजात	नानावर्ण	प्राणाः
वजाति	नानाप्रकार	प्राणा
वजाति	नानाप्रकार	प्राणा

हजारों

بساط عافيت آرام خواهند يافت

विस्तारि	आराम	खाहन्	याफत
यत्	आराम	खाहन्	याफत
यत्	आराम	खाहन्	याफत
यत्	आराम	खाहन्	याफत

शक्रवेति कल्याणम् सुखशय्याय म

सहस्रशः प्राणानानाजीवजात  
यश्चानेदवातरयेषुसखशय्या  
योचकल्याणमामंशक्रवेति ॥

भाषार्थ

हजारों प्राण अरु नानाप्रकारजीव  
जातियां भी आनन्दरूपी छोटो देग में  
अरु सुखरूपी शय्या में भी आराम  
लभने को मरुते हैं



सवाजिमि	वरवगजि	ममालिदत	
मैग्राः	सम्भारस्य	विस्फुटने	मैग्राः
		च	
मैग्रीके	लाजिमके	प्रकटकर	मैग्रीके
		नेमैभी	
گی	ک	ش	باری
मगी	किं	शब्द	बादी
म	यतः	कर्तम्	उपक्रमः
	निसकारणा	करनेको	आरम्भ
	ने		

मैग्रीमैग्रीकेमैग्रीकेमैग्रीके  
 भारविस्फुटनेचास्माकमेवो  
 पक्रमः कर्तमुचितआसीत् ॥

### भाषार्थ

अरुमैग्रीकेमर्यादोंके जाहिरकरे  
 तोमैं अरुमैग्रीके लाजिमके प्र  
 कटकरनेमैंभी हमारेकोही आर  
 म्भकरनेकोयोग्यहोताभया ॥



انزبادی انکشاف صبح

सवर इन्कशाफ अजुमवादी

प्रभातस्य विकासस्य मूलान्

प्रभातके विकासके मूलान्

انفرمانروایان گذشته باصناف بنی نوع

अजुमवादी अजुशतह अजुफमारवा यानि

लोकांतरंग राजास तानाम

महत्त्वोरुषेसत्याहतेप्रशस्त  
प्रभातविकासमारम्भकेषां  
चिह्ननिमयं ॥

भाषार्थ

बड़ीदेम्मतसत्यकरकेपलीदीङ्ग  
ई सादनरूपीप्रभातके विकास  
के मूलान्



ब्रह्म	व	इतिवात	पतिलाफ
यदि	प्रभूत	विनयस्पव	मैमाः
जब	होताभया	विनयकेभी	मैत्रीके

واری آن ولاد و زمان شده با

बाबाश	वालादूया	ओ	वादी
स्य	आर्याः	यूयम्	खिलदेशे
पृथ	तम	मयदानमें	

मरणा यन्मरणात्तानां यन्मरणात्  
 रंगतानां रंगानि तमेव मैत्रीपदवा  
 विनयपदवांचयतोभूत यदि  
 तत्रभवेत् आर्याप्रप्ति निवलेदेशे  
 उपक्रामेतः संवृत्ताः स्य ॥

### भाषार्थ

मनुष्योंको मरणेवाले होनेने परलो  
 कनोगयेहोये राज्यलोकोंकोसदा  
 हीमैत्रीरूपीमार्गमें अरुविनयरूपी  
 मार्गमेंभी जिसकारणनेहोताभया  
 जबतमपृथ्वरेलोकइसमयदान  
 मेंआरम्भकरणेवालेहोयेहो ॥



मराठे	मा	हस्त	ब्रुम्ह
कवति	मा	हेम्माति	वर्जिम्माति
रत्ता	अस्माकम्	पौरुषम्	ग्रीवायाम्
रत्ता	हमारे	हेम्मतके	गर्दनमें
बायें	रابط	अइन	ओमरात
कर	गवितर	इं	व मिराआति

तदात्यर्थमस्मत्पौरुषग्रीवामा  
 रूपास्यामै आविनयस्यवर  
 हाकताभूत् ॥

भाषार्थ  
 तब बहूनकरेक हमारे हेम्मतके  
 गर्दनमें तदात्यर्थमै आविनयस्यवर  
 हाकताभूत् ॥



तीय	दृष्टिम्	वीराणादेश	गता
-----	----------	-----------	-----

पराणे	नजर्	वीराणादेश	राजाने
-------	------	-----------	--------

अशनायी	अन्दाख	सल्लानूया	अशनायी
--------	--------	-----------	--------

प्रेम्हेव	दत्ता	पतदाख	प्रेम्हेव
-----------	-------	-------	-----------

प्रेममेंभी	देके	सल्लानूया	प्रेममेंभी
------------	------	-----------	------------

प्रेममेंभी	देके	सल्लानूया	प्रेममेंभी
------------	------	-----------	------------

न्यादगारिशामिलाखेहेतेप्रथ  
साहाय्यप्रार्थनाकृतापिश्रुतिश्रव  
भूमिनगता ॥

### भाषार्थ

इसकारणते वीराणकेराजेने पुरा  
णेमारिफतवाले अरुप्रेमवासनेभी  
नजर्देके सल्लानूयादगारिशामि  
लनामाकासिद्धेवजके मददके प्रा  
र्थनाकीतीभी अहीकारकेभूमिको  
नहीप्राप्तहोतीभई ॥



मوقوف

قبول

زید

نیر

शादरुखमीर्जस्य मनोरथस्य  
कामोजेषु कश्मीरेषु विज्योरे  
पुतीराहेषु वा देशानामतिशी  
तलेषु प्रहारो मिलितो मे भवेदि  
त्यासीत् ॥

बमुकुफि

कहल

नरसीद्

गान्

भूमिको

प्रहीकारके

नदीप्रानभ

प्ररु

آن

داشت

که

یادر کابل

आं

दाशान

कि

पदरको

भाषार्थ

प्ररुशादरुखमिर्जाका प्रयोजन  
सो होना था कि देशों के



यादस्तागाह

नयारनुरायाविहित

तशीतल	देशानाम	ये	तीराहेश
वहतसरद	देशोते	तो	यातीराहमें

داشته باشد ملاحظه و جواب

व जवार	करव	मुलारजय	राशनवाश
--------	-----	---------	---------

भाषार्थ

तिवोरिम	सामीप्य	अनुरोधः	मिलितोभवे
यायाः			न

नजदीकहोनेका अरु तमारा  
हमसायाहोने काभीमुलारजा  
फर्मायाहै ॥

याया	नजदीकीक	मुलारजा	मिलेजावेगा
भी			



बाजाबत म्फ्रुन नशुद

विर न शदर मकरं वरंजानिव

गजे नसेहना प्रन्तिका प्रतिप्रवस्य

सुबामें नहीहोतीभ समीप प्रह्नीकारके

करिम निसर मिराया

रजाया नीज करदेम वो

रचितः तस्य

अतश्चतत्रिवेदनाप्रतिप्रवगो  
वरानसंहनामालवराजेचास्या  
प्रहाशचितः गाथादेशीयाश्च  
मिर्जाजातीया महावैभवदृष्टसा  
त्कृताः ॥

भाषार्थ

इसकारणते तिसके विदामि प्रह्नी  
कारके समीप नहीहोतीभई फेरसा  
नवदेशके समीप तिमर



संगतमाभारशाहीनुव  
पितम् ॥

यत् तस्यदेशस्य राज्यम् निष्प्रीकृताः

जो तिसदेशके राज्य मेगाया

داخل محروسه است. کلار مار

मलानि प्रसन्न महारस दाखलि

नचरे भवति प्रसन्नमालि संगतम्  
नैः

मैं है हमनेरदा दाखल  
कीने

भाषार्थ

तिसदेशका राज्य तिसप्रसादे  
देशोंके साथ मिला होया भा  
हूरशाहके मुलानिमेंकोबख  
शाहा ॥



ک	مبادا	جنور	
किर	मवादा	जनदि	
रति	माभूत	सैनिकाः	राण्य
इह	नहोहोवे	लशकर	राणाका
ازمنصوبان	ایران	اندیشید	فرض
अनुमनसो वानि	यीरां	अनदेशी इह	कसद्
संगताः	यीराणदेशे	ग्राशाझ	ने

यीराणदेशसङ्गतागान्धारसे  
नेत्याशङ्कतोराणदेशसैनिका  
पुथनीतिमाभूदिति ॥

भाषार्थ  
नराणदेशके लशकर यीराण  
देशकेसाथरत्नद्वैकन्दहारकेल  
शकरइह अनेशा करके लश



विलायति दर्मियो खलतिअनी

अतोमहा देशस्य मध्ये महात्कलरः  
भावानां

मारेवरेप्र देशके दर्मिया वरेशोर्  
पवालेके

نیئر یکی از او باش بد طینت

तीनत् अजअववा उके नीज्  
श

तिः उष्टानाम् एकः पुनः

इष्टोमें एक अरु

अगतभामारुजातेवर  
तदस्यालितदेशेषुमहानुमा  
वानोचभवतो विषयेषुमहात्क  
लरः प्राडभंविद्यतीति ॥

भाषार्थ  
तेसकारणते अमारहाकीनी निर्ना  
देशाको अरु वरेप्रतापवालियोनुसा  
उदेशोंमेंभीवरे शोर् जादिरहोगा ॥



سر بشورش برداشته

ति वरदाशत वम्परिश सर

तरम् स्यास कलदे मूर्धानम्

सुदनमें उदायके शोरमें सिर

شده که فرزند شاه مین

शदः कि फरजनदि

पुत्रः इति अभूत

बदकशानकाज्ञारेकचिदुष्ठा  
नाउष्प्रकृतिः कलदेप्रोदृत  
मूर्धावज्ञातिथेयावत्तस्यार्थो  
संवृत्तः मिर्जीशादरुखस्यात्म  
नोस्मीति ॥

भाषार्थ  
बदकशानकेकुहिलानमें कोई  
उष्टोंमें कुप्रकृतिवाला शोरमें सि  
उ उदायके सुदनमें तिस



पयवसत ह	वयो	ग्रोनादियत्
संति	संगताः	तेन तद्देशस्य
हैन	रत्ना	तिनकेसा तिसदेशके य
तुजे	मुदुह	स्तुद
वज्रह	नमूदसुह	वस्लीमहा फिरसताद ह
दः	कृताः	साहाय्यप्रा येनाः
	विषदाके	मयदानमें सरिगदीन

सङ्गताः सङ्गीतिविज्ञापनाः  
प्रदिताः साहाय्यप्रार्थनासु  
कृताः नासुवप्रसादोनकृतः

भाषार्थ  
तिसदेशकेजमीनदार तिसकेसा  
यरत्नाहैन ययपि प्ररजियोवेजा  
या प्ररुसाहाय्यके प्रार्थनाकीतीति  
नोंमें ॥



आواره دشت ادبار

इद्वार दशतिह ओवारय

भूत विपदः विलस्यते वेधम्यमाणः

होया विपदाके मयदानमें सरिगर्दान्

सखन नाकरी भूमिवाला अस्त

प्रसन्न हेमतिवाला नागजीर सखन

मदन्योरुष योग्या कथायाः

इति विपतिविलस्य  
लेखं भूम्यमाणः सं  
वृत्तः यतः कथाव  
स्तरदासमहर्षौ  
रुषयोगेति ॥

भाषार्थ

इस कारणते विपदा रूपी मयदा  
नमें सरिगर्दान होया जिसका  
रूपने...



दर्शियो सुलाह दर्शि

आगता मध्यस्था पेकामयस कथा

आया दर्शियो सुलाहके कथा

ک گراید معنی میخواست

किह गिरायद वमैने मेखाहद

था शृङ्गान सत्यम् कामयते

का पकड़े सत्यनो इच्छाकरता है

कथावल्लभस्य यवसत्य  
यथा परेशरचितमद्वयशालिनो  
योग्यमिति ॥

भाषार्थ

जब पदले सुलाहके कथादर्शि  
या आया तब मनु इच्छा करता है  
कि कथाके रूपति सप्रकार सत्येनो  
पकड़े जिस प्रकार ईश्वर ने बड़े की ई  
को योग्य है ॥



ایزدی باشد فی الواقع

याः कथा हतो लेखश्च निवेदयति  
ता सोमनोहारिणीनां कथानां रूपे  
चेद्व्यतामियात् ॥

अगर फिलवाक वाशद् इज्दी

यदि सत्यम् भवेत् परेशरचिता  
नाम्

जब सत्यकरके होवे ईश्वरने

قصه که دلاویز سخنان

कासिद् कि दिलावेज् सुखनाति

याः मनोहारिणी कथानाम्

भाषार्थ

हन् धर खतभी जौन सी



प्रज्ञा

वदनद

सुरत

नानियमितमवित ॥

किम्

अतः

वृथातामिषा  
न

रूपम्

क्या

इसथो

रूप

ساخت

باید

مقرر

جائی

प्राप्त

वायद

मुकरर

जाये

तम

अवितम्

नियमितम्

स्थानम्

को

योग्य

मुकरर

स्थान

भाषार्थ

तब तिसथोक्याबिहतरहै अथ  
वास्थानमुकरर करनेको योग्य  
है ॥



...یکجہتی آراستہ بزم

यत्र सविश्रामस्थाने ऐक्यमत  
संसत्सजासादिति ॥

शरास यकजहती बज्रमि

सत्ता ऐक्यमतस संसत्

शरासा मैत्रीके सभा

ودینوی دینی مقاصد غیر

इनयवी दीनी मकासिदि गौरि

समतोद्भाः श्रयाः परम

भाषार्थ

निमकरागाहमें मैत्रीके



तनकः ववयानि वमैनवी

विषाच निश्चयस्य ववसा प्रयत्नाश्च

भाकरके निश्चयके कहनेकर भातिनभी

گرود پنهان بسمع ہمایون

मायू वसमः चिना गर्दद्

स्ने श्रेत्रे तत् गच्छति

कानोंको सो जावन्गे

निश्चयवचनशोभाभां दीपमा  
नाभवेष्टः ॥

भाषार्थ

परायीमियोंजीकेविना दीनके  
प्रयोजन अरु जाहिर अरु भाति  
नभी जोनसी हैन मतलुभसो निश्च  
यके कहनेकरके अरु शोभाकर  
केभी रोशन जावन्गे ॥



جمعی از کسبستان بودن

नमयु ब्रह्मनि अज्ञमगली नता

संहतिः मातिकासम प्रकृतोना वासः

समूह वसना प्रसाडे

دست آویز سخن ساختن آیین

दस्तावेज़ि साखन साखन प्रायीनि

निमित्तम् कथायाः कृतम्

मातिकासमप्रकृतिर्जनसंहतिः  
पंचनदसीमास्वस्मदासः कथाया  
निमित्तोक्तम् । या कथायैशोमूला  
व्यवस्थापिका भवेत्तामकार्षीदिति  
प्रशस्तेस्मच्छेत्रे प्राप्नोति ॥

भाषार्थ  
मातिकासमानप्रकृतिवाले लोकोंकेस  
मृदपञ्चाकेतरफोंमें प्रसाडेवसना

विपरीतकथाकेदस्तावेजकी



बाशद	हस्ती	मबानी	सोते
ताम	भवेत	मैयाः	मूलस्य
सो	होवे	मैरीके	मूलके
दल	درخو تسرای	که	امری
दिल	दखलव लगाय	कि	प्रमूरे
रहो गृहे	यत्	कार्यम्	भाषार्थ
बपे घरमें	जो	कार्य	सबूद्धै कि जो कार्य हृदय रूपी बपे घरमें नहीं होवे ॥



آیجہ

یاہ

ظہور

तहाकामज्यायांकिंप्रकटतो लभे  
त यत्किंचित्लेखनशोभयासङ्ग.  
तेस्यात् तादृपर्ययप्रहानिःकिमु  
जायत ॥

शोभया

श्रीचिह्न

यावद्

जहर्

शोभया

यत्किंचित्

किंलभेत

प्रकटनाम्

शोभाकर  
क

जोऊल

कालभताहै

जाहिरनो

११

آن

برخلاف

عمل

रवद्

श्री

बखलाफि

प्रमत्त

तस्य

विपर्यये

प्रहानिः

भाषार्थ  
मोजभानरूपीसभामें जाहिरनो  
कालभताहै जोऊललेखनेके शो  
भाकरके पदार्थताहै



शिकार	वसैर	वहवाव	
सिदेशम	रगयाव	सङ्कमराम	गन्धवहञ्च
सदेशका	शिकारभी	सैरभी	हवाभी
बसोबि	मेरसह	वखातिर	चिना
शे	प्रयाति	मनसि	तथा
	जोवतहै	मनविषे	तथा

सङ्कमराम गन्धवहञ्च  
 पिआग राख्य देशे राग्यागारे प्रस्था  
 नमाना पया मश्तेत देव विने प्रयाति ॥

### भाषार्थ

यद्यपि पानी अरु हवावभी अरु सैर  
 अरु शिकारभी चंगे आये है न तथा  
 पि आग राहना मवाले राग्य चरमें  
 प्रस्थान कुर्मावताहों इह मन विषे  
 जावते है ॥



यथावावहकार्नावाकस्तथ  
तामियात् यत्किंचिच्चालिखितम्॥

भाषार्थ

जिसतरानुदयारियोंकाज  
मानवसाहोवे जोऊहदि

ترتیب

فرمایم

تا

ز

उज्जहत

कर्मयेम्

ता

शानि

प्रश्नापयामः प्रश्नानम्

यथा

वाक

प्रश्नान

कर्मवताहें

जिसतरा

जमान

آنک

تشریح

رقمہ بود

ک

प्रोकि

तहरीर

रफत हद्

कि

यत्किंचित

लिखिते

समत



अस्मि	दशवातिर	शुवार
दत्तः	वर्तते	मनसि
		वलीकम्

क	در بواطن	قدسیہ	فرمانروایان
कुमारवा	कुदासिप	दशवाति	किहू
नि	य	नि	
जाम्	उद्देश	मनःस	यतः

किं नारायणस्तु प्रतिनदय  
 कमनसि वर्तत इति तद्वपेक्ष  
 नागतम् ॥

भाषार्थ  
 किं नारायणस्तु प्रतिनदय  
 कमनसि वर्तत इति तद्वपेक्ष  
 नागतम् ॥



مطالع انوار الہی

महादेहि अनवारि मत्तालेह  
कटदेशाः परेशस्य महसाम् उदयप्रदेशाः

माहिरस्थान ईश्वरके तेजोंको उदयस्थान

صف اند غبار اکفا

किफहा गुवारि अनह व सफा

मलीकम् संति सुहानाम्

यतोयेराजनोमहावैभवाः प  
रेशभदसामुदयप्रदेशाः सु  
इलक्षणानोचप्रकटदेशाः संति॥

भाषार्थ  
जिसकारणते जोनसीवडे विभवत  
लेराजेहैन सोईश्वरका तेजोंकोस  
यस्थान अरुसाफ लक्षणेशाबात



नृणां	नमोपनी	वशसतिकरा
रिनबकात	रह	३
कथम्	सर्वेषां लो	नष्टरूति
	कानां	स्थितिं च
किं सतरा	सारे लोके	नदीपकउ
	का	तादे
		करा

خوردستانی آن منشأ علی الخصوص

रहमानी	श्री	मनुष्याय	अल्लखस
		स	
येन	तस्य	मनीषिते	धुवम्
हो	तिसका	मनुष्या	निश्चयकरके

समानाद्यलीकास्मिताभेद  
ह्राति सर्वेषां जनानां व्यलीके  
तिकथं गृह्णाति तस्मिन्नीषितं वा  
त्येनास्ततया बाधुवंस्यात् ॥

भाषार्थ

जिस कारण तेजो न सीबडे विभववानेरा  
जेहै न सो ईश्वरका तेजोंका उदयस्थान  
अरु साफल्यदणोंका प्रकटस्थान है न  
तिनोंके पवित्रमनोंमें हमसरोका म  
लाला अकस अरु करा नदी पकउता  
है ॥



नक्षत्रीकंदमापयसाविज्ञपरा  
किमुनलोपयानि ॥

भाषार्थ

सारे लोकों की मलाला कर र कि स  
नगमक दे गो नि स काम न शा लान

عفو

بنزال

چرا

फर

श्रु

बज्जलालि

चिरं

अहेच

हमायाः

पयसा

किमुन

साफोकेभी

हमाके

जलने

किमुनही

از خود کامی

او

نگردد

محو

अज्ञातका

वो

नगरदद्

महव्

सः

नयानि

लोपं



शिवद्वि निसवतिव तत्सीगत  
 रह्यानिगत

फलेन अभूत प्रमदह प्रपराथान  
 है

तलकरके होताभया रसवदिव तत्सीरोंको  
 रमें

جون بادیه غریب شد

वे शद् गुरवात वादियय

दा संवत् दीनानाम विलप्रदेशे

होया गरीभोंके मयदानमें

न्यामोभूत तत्फलेन दीनानाम  
 लप्रदेशेवंभूम्यमाणाः संवत्तः ॥

भाषार्थ

सोमलालाक्षमाश्रयीजलकरके  
 मनश्रयी पत्रते लोपनो किमून  
 ही जावनाहै ॥



آوردہ نقوش زمانہ...

नासि नदामत् नकुसि शोवरद्

नलाहत् नजायाः चित्राणि आगतः

नलाटने नजाके नकश ल्याया

फुराशत درگزاینده شد آنکه

शोकि शद् दुर्युजरा नहूरदाशत नौद

संपन्नाः विस्मृतौ प्रकटीभूतानि

तदशाललाटाहजाचित्राणिप्रक  
टीभूतानि यदापुनःशरणमस्मा  
कमागतस्तदापूर्वापसथाविस्मा  
रिताः ॥

भाषार्थ

सो खुदकामी होने ते बडे घर में  
तख्ती रों को प्राप्त होता भया तिस



शाहिरुख मिजा	इलतिजा नमूदनि	कि
-----------------	------------------	----

आत्मजो नोव	मिजीशाद रुखस्य	शर्यनानो इति
---------------	-------------------	-----------------

पुत्रोंका	शाहिरुखमि जीका	शानिजीक रणा	कि
-----------	-------------------	----------------	----

آن	محبست	از آثار	دولت
----	-------	---------	------

श्री	मुदवत	युज्जुआसा रि	दौलत
------	-------	-----------------	------

आभिः	प्रेमाः	विहेभ्यः	सम्पदः
------	---------	----------	--------

प्रेम	निशानोंते	दौलतके
-------	-----------	--------

दवैयात्मजशर्यनानोचलेभ्य  
निवासेष्टदेप्रमविहेभ्योयास  
जागताभूत् ॥

भाषार्थ

तिसके हालके मयेते लजाश्री  
नकशजाहिरहयेहैन् जबफेर्य  
नाहल्यायाहैनवतखसीरविस्मृति  
मेंदोया ॥



نجد و اعلی است

शोभामहनागरविशिष्टैर्षु  
ष्ठाभिरस्मदभूनामेतदेशाग्रा  
मिस्रयाकथमात्तग्रा ॥

महान् असत् वज्रयला मज्ज

कथम् भवते महनायाश्च शोभायाः

किसतरा है वरियायीके शोभाके  
भी

آینچان خاص را با اینجانب منتسبان

प्राविना वरैजानिबु खामरा मुनतसिवा  
नि

अवस्थाने अस्माकम् वभूनाम्

भाषार्थ

शोभाके अरु महनाके चरके विशि  
ष्टोत्तमनेखाम सम्बन्धिपोका इसम्मा  
नादिश नि



यगानगी	बसुखनाय	श्रीकि	
	मुदवते		
जगाना	मैयाव	प्रेम्ना	यकिंवित्
नफसील	मैत्रीकरके	प्रेमकरके	जोऊछ
	भी		
شده بود	شامه	موانحات	خامه
दहद	शमामर	मवावात	खामय
भूत	गानिया	मैयाः	लेखनी
	गन्धवाले	मैत्रीके	कलमकर
		के	

यकिंवित् गंगानियाल  
मैत्रीप्रेमहेतुना विजयानांगगा  
नालिखिताभूत् ॥

भाषार्थ  
जोऊछ मैत्रीके गन्धवालेकल  
मकरके मैत्रीकरके अरु प्रेमकर  
केभी जयोंका तफसील लिखाहै ॥



حسن نیت آن ۱۰

तत्समहाशयानोसप्रकृतिफ  
लंसंगणयदृष्टाजानाः यत्किं  
चित्मूलानाहसैनदस्तेषमलेख  
मालिवितम् ॥

ज्ञानजाद	आं	नियति	इसनि
महाशयानो	पुष्पाके	प्रकृतेः	शोभनायाः

बडेजातिवा	तमारे	प्रकृतिके	शोभनेवाले
-----------	-------	-----------	-----------

شيم آنکه مصوب مولانا حسینی

मूलानाह	मसहवि	आंकि	शदेम
---------	-------	------	------

भाषार्थ

सोबडेजातिवालेतमारे शुभप्रकृति  
काफल गिनके दर्शनो प्राप्तहोता  
भया जोसखमूलानाहसैनद

आहसै	हस्ते	यत्किंचित	गताः
------	-------	-----------	------



किह बूह मुहवत

पुत्रेण शति अभूत प्रेमाः

पुनरो इह होयी मुहवतके

خواہ اس چہ کہ

दरावर किह चिन्ह खादिशि

प्राः याः काचन इच्छाः

जोनसी ऊख खादिश

प्रियपुत्रेणवाल्यात्काश्चि ॥  
कृताः पाउष्टाः सुः ॥

भाषार्थ

बालक होनेते प्रियपुत्रेण ऊ  
खादिशेकीनेहैन् जोनसीउष्ट  
होवे ॥



ک سالکان ماعل

मराहिलि सालिका किह  
नि

पदवीम यायिनः ये

पदवी रस्तेको चलनेवालि जोनसी  
या

صور تیرا از نامون ضلالت و بیابان

व्यावनि जलालत प्रज्ञासुनि सूरतरा

वेलाफ

दिग्भूमस जंगलात् समत्ते

येः र्थपदवीयायिनः समत्त  
प्रयतगृहवास्तव्यादिग्भूम  
जङ्गलाद्यत्ययसून्यभूमेष्टो  
पदेशदेशं मैत्रीदेशं चानैष्ठः ॥

भाषार्थ

जेहजे मैनेकेरसतेपरचलनेवाले  
हैन सोजाहिरयवित्रचरमैंबसने।  
वालियोंकोरसतेकाबुलनाशपी  
जोनजलनहै उसनेप्ररु विपरीत



श्री धुरुर वरुतिताफ  
नमहमुद

मानन्दपयत्नकालेनन  
पवाव्ययरहोष्टेधावन्ति ॥

देन	पर्यंतका लेन	अनैषुः	अविरोधता याश्च
नंदसमे	आकबत से	त्यायेहैन	अरुमेशीहोने के

شأنه باد عالم عالم تائید

दाति	आनम् आ लम्	बाद	शिताफतअ नद
ारम्	भशमभश म	अस्त	धावन्ति
	वहतवहत	हो	योइतेहैन

भाषार्थ

सोईही आनन्द समेत अन्न  
कालकरके अस्थिर खलवत  
घरमें योइतेहैन ॥



समावी	समावी	करीनि	रोजगार	समावी	समावी
शकाशस्य	शकाशस्य	समीपे	कालस्य	महताम	महताम
शकाशका	शकाशका	नेके	समके	अष्टौको	अष्टौको
नुमानि	नुमानि	हालरा	अनुश्रित	कतन	कतन

अनन्तोपकारप्रसादौमहाऊ  
लानामार्गणोकालस्यसमीपे  
करोतभ्रशंभ्रशंपरेशः येता  
कालिकेसमयेकलहकोला  
हलादापकोलाहलाचपालये  
ति ॥

भाषार्थ

परमेश्वरदेऊलवाले अष्टौको



श्री गुरुभ्यो नमः

साजदपरोत्कालेन

दत्तः पौरुषस्य सर्वस्य पालयति

विपर्यासादसम्बन्धाच्चोयत  
सखेसखान्तरणेवित्यस्या  
समदाफलभूमिसफलिक  
नैप्रयतन्ते ॥

वरी हेम्मतके सारी पालतेहैन्

نام و گنجینه دارنده

भाषार्थ

अनामरा जमहारी किह दारन्द

प्ररुसारीवरीहेम्मतको उसकेपति  
खरवकरतेहैन् जिसप्रकारसा

मनुष्यान् सर्वान यथा कुर्वति

रेमनुष्योंको विपरीतते प्ररुअस  
स्वन्त्यतेभीलभे सखवाने सखदेनेवा  
ने विख्यावने विघेरखकरके जाहिर

नुष्योंको सारे जिसप्रकार करतेहैन्

जोनिष्कलभूमि उसके सफल कर  
गोवासने तलासुकरते हैन् ॥



در باب امن و سیوا فیت

तद वसिति आ प्रमनह दखिसाति

मस्य आयतमते सखस्य आसुरो

भावके लभेसखस्य सखके विद्यावनेय

صورت می کوشند گرداناد و رنگا

ममि गरवानाद मेकोशनद सूरत

करोत प्रयतन्ते समसायाः

हर्षवाङ्मये काले ग्रान  
दसमीये च काले यस्य काल  
स प्राशम्य भभूत ॥

भाषार्थ

वदन्त हर्षवाले समे विषे ग्रह  
ग्रान्त के नेरे रोने वाले समे



किह	इन्विसान	किह	इन्विसान
सिता समयस	यत्र	दर्षस	
सादत	समयको	जिसमें	दर्षके
عجبت از تربت آباد کابل. بیش			
शाहद	काबुल	दर्नुजहत	वज्रजत
नेन	काम्बोजदे	दर्षागारे	दर्षः
काबुलम	खुशीकेच	दर्ष	
लकके	रमें		

मनमें श्रुयंत्रांशमभूत  
काम्बोजदेशदर्षागारे स्वस्वताप  
टिकाया दर्शनाध्ययनाभ्योर्दर्षो  
दर्षोभूत ॥

भाषार्थ

मनको भी जिसमें विषे सादत  
होता भया तिस विषे काबुल मुल  
कके खुशीचरमें साफ फहीके दर्शन  
ते अरु घटनेते भी खुशी खुशी हो  
ती भई ॥



شہ بشايم نورانی خلت

शह बशमायम नवगनी खुलत

अभूत ग्रन्थम विकासस मेशाः

होताभया बोध विकासका मैत्रीके

روحانی بسطت ضیاء اشتقاق

इरानी वसतत वज्रिया नशका

मैत्री विकासग्रन्थप्राणितायाम  
कंप्राणिताप्रकाशकचपदाकी  
इत्यलपद्योत्थप्रयोजनपुष्पात्थं  
चपदार्थरुसमोत्थवप्राणवापुला  
भेनप्राणमस्तलङ्गे नवीनामाइता  
मलभत ॥

भावार्थ

पदरूपीभागोंके पुष्पजातियोंके बोध  
ग्रन्थप्रयोजनरूपीपुष्पोंका बोध ग्रन्थ  
रूपीपुष्पोंका बोधभी जो मैत्रीके



श्री बुरखाने मलिक

मृत्युंश्चैव ज्ञानं

अथ चामुखो भूत

माषस्य	आमुखः	सहतायाः	सहतायाः
नजुहीकीका	आरम्भ	निर्मलभो	साफ
बुद	कारनाम	नगरिस्तान	यिकताली
बुद	यकतादिनी	निगारिस	कारनामय
		नानि	
अभूत	मैशाः	विशगारस	उस्तिका
है	मैत्रीरूपी	नकशाखा	पुस्तक
		नका	

भाषार्थ  
जो मैत्रीरूपी नकशाखानका पुस्तक  
है जिसमें सादतका घर नजुही  
कीका आरम्भ होता भया ॥



و ریا حین مضامین و معانی

व मग्रानी मज्ञामीन् वरयाहैन

प्रथम्यच प्रयोजनस्य प्रथमं

तिसके मैनेके प्रयोजनस्य प्रथमोंके

انتسام روح طراوت تازه

नरावाति इह इति सामि

प्राणस्य वायोः

सर्गवत्सलनोविकासेनच  
मस्तलङ्गेनाक्रमेप्रफुल्ल  
तागृहीता ॥

भाषार्थ

सर्गके सोंई मन के विकार



वप्रकुल्लममृत ॥

अल्लता मनसः विकासेन सर्गवत्  
ससवजी मनके विकासकर सर्गकेमाई  
के

رياض محبت و قربت

रुदीमी वकरावत मुहवत रियाज़ि

रागस्य सस्वत्यस्य प्रेम्नः उद्यानम्

सस्वत्यरूपी प्रेमरूपी भाग  
भी

भाषार्थ

प्रेमरूपीभाग अरु उद्यानसस्वत्य  
रूपीभागभी सरसवजहोताभया॥



اساس خلوص وفاق

मि इफाक खुलस प्रसास

र मैयाः सत्येन मूलेन

यमें मैरीके समरूप मूलने

रखिमे सिध्द ऐन الحق

यहर सन्नियय इं अलदक

अभिज्ञान रदम सत्यतः

मैरी सत्य मूलेन हरि  
दार्शनमात्रम् ॥

भाषार्थ

मैरी का जो सत्य रूप मूल है ति



कालि इहानी मुलाकाति  
मय

कया कथनस्य प्राणानाम् दर्शनस्य  
व

जानके कहनेकाभी प्राणोंके दर्शनका

دل مشتاق و طریق برای ضمیر

रिसा वतरबूषी मुशानाक दिलि  
राय

नसः हर्षशोभा प्रेमनिर्भ मनसः  
प्रदम् रस्य

हर्षकेशोभा प्रेमकरके मनको  
देनेवालाभी पूर्ण

सायकन्दरममृति ॥

स्वनिहाकथनस्यवाधितानम।  
लि तदेवप्रेमनिर्भरमनसःस  
ननसश्चहर्षवर्धकंहर्षशोभाप्र  
देचभावितंशक्नोति ॥

भाषार्थ

इहावत सत्यकरके प्राणोंकेदर्शन  
का प्ररु जबानके कहनेकानिशा  
नाहै सोईहीप्रेमकरके पूर्णमनको  
प्ररु शुभमनको हर्ष वदावनेवाला  
प्ररु हर्षकेशोभादेनेवालाभीहोने।  
केसकताहै ॥



وَمَصَابِي	صُورِي	مَجَالِسْت	بُود
مَسَارِیْ	سُورِی	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ
مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ	مَنْجَالِ

समस्तसभासमस्तसङ्गमेषु  
 वविहसस्तदेवादिनीयं वस्तु  
 गणायितं शक्रवर्त्ति ॥

भाषार्थ

जाहिरमन्त्र लिसोंमें अरु जाहिर



तत्	प्रभूत	गाथिया	मैत्राः
सोईही	होताभया	वोयवाले	मैत्रीके
وفاق	منال	وتصفیه	صلح
रफाक	मनादिलि	वतसफिय	सलह
मैत्राः	नागस	सच्छतायै	मैत्राः
वृषी	वशमाके	साफीवास	मैत्रीके
		तेभी	

सामकन्दममृत ॥

यमैत्रीनागसच्छतायैवोभयेपेद  
तोषवस्यांगच्छति ॥

भाषार्थ

जोऊछमैत्रीरूपी खुशवोयवालेक  
लमकरकेलिखाहोताभयासोईही  
मैत्रीकेमूलके तकरियायीवासते  
ग्रहमैत्रीरूपीवशमाकेसाफीवास  
तेभीहोनोंतरफोते इन्तिजामनो  
प्राप्तहोताहै ॥



رو ہندو کوہ فیما بین

स्वीमोवेन हिन्दो कुह रवद

यत मथस्याः हिन्दायगि गच्छति

होगा मथस्य हिन्दुनामा प्रामदोताहे पर्वत

است پیرا نمود جلوہ

प्रस्त पयदा नमूद जलव

प्रसक्तम कृता गतिः

हिन्दायगिरिर्मथस्योभवेत्  
तेनैवचलेखेनसत्तानभू मौ  
गतिः कृता ॥

भाषार्थ  
हिन्दुनामापर्वत इसमेंमथस्य  
होगा तिसीखतनेभी सन्दरशा



कोनफसा दरआलमि शरीफतर  
द

गावेच जनिमतिथ जगति अतिमहत  
में

वरमेंभी जन्मअरुमर  
णाथर्मवाले जगतमें अतिबश

تودو توفيق نشان نادره

अनद निशानर वतबफक तवउद

मेम विहृतया मैत्रीच मैत्रीम

मेम निशाना अरुमैत्रीके मैत्रीके

विहाद्वरमदतिमदत्तयज  
निमतिथर्मइदकार्यागारेमै  
त्रीमैत्रीविनाविहृतयानदत्त  
मितितमस्ति ॥

अम

भाषार्थ

आलिमलोकोने मैत्रीविनाजन्म  
अरुमरणाथर्मवाले इसकार्यवर  
में अतिबशकोई अन्यकार्य निशा  
नानहीदिताहै इहवातजाहिरहै ॥



ک ۰ دس طوت جلال

مردن د جلالی در ستم بانی گاه

آیایام مدهایام آتایام جات

آیایم بده آتایم کابی

ک اساطین سلاطین

ملا تین برساتی نی

येन वजात प्रत्यक्ष शयोपासीनायेरा  
 न्यस्तभास्तदाज्ञायामनुष्यजातिंवशी  
 कृत्यप्रत्यक्षादम्बरनीत्यैकोपशक्ति  
 प्रसरेणसुषमार्थिना ॥

भाषार्थ  
 जिसईस्वरगोकली...



सुधमा प्रत्यक्षम् अस्वरम्

रस्त ॥

दिता है बरीशोभा जादिर कारखानेके

نیایش بر رویان قافله سالاران

पलारानि काफिल बरखाया नयाइश  
नि

शानो सार्यवादस्य जीवनं प्रति स्तुतिः

गोंके काफिलाके जीवनेके अस्तुती  
ऊपर

भाषार्थ

अनन्तर प्रयोजनरूपी जो हैरा  
जमार्ग उसविषे चलनवाले जो  
काफिलातिसके जो नसी अष्ट  
हैन् तिनोंकी जीन्दगी प्रतिवा  
रेवार अस्तुती दोवे ॥



अथैमोदात्रिः स्फंदतोययौ पुनः प्रत्यागतप्राणः श्रुत्वा रामं जहाधः ॥ नाम्ना वाः सु  
 कगद्गदं शोचंतामानजं रामं जानकीवविशेषतः विलापविशेषेति ॥ १५ ॥ कौमुदी  
 कपयाविष्टः कसंविषदमास्थितः राक्षसायोपगच्छन्वदन्त्रं सुमतेः ॥ १६ ॥ कृच्छ्राप्रययौ  
 तिलाः सहस्रधामतां पातासि यामास्तमचेतसः ॥ १७ ॥ हनिततोरजाशोकं संजातविक्रि  
 तोमल्यः मवदद्वाष्पगद्गदः ॥ १८ ॥ विधौ विषकक्लं नानांधन्यांधैर्यप्रमाथिनाम् ॥ १९ ॥ संज्ञानभवंमे  
 राः स्वयंपरोपतस्मैववर्धिस्यो कर्मशास्त्रिनः ॥ २० ॥ शुभाशुभफलस्फातिभं जतेहेतुजंतवः ॥ २१ ॥  
 धनमयाडकृतं कृतं तस्मैवायमप्यस्य विषाको जीवितापहः ॥ २२ ॥ धनीपराक्रमारोहे काले  
 गतः सरपतीरे सरगायाकेलिलालसः ॥ २३ ॥ निशितव्रजले मग्नमद्विषकोऽङ्गजराः ॥ २४ ॥ लसन्ते  
 यातद्विद्वत्तया तस्मिन्काले निरालोके धनिराकलितो मया ॥ २५ ॥ राजवंदितगंभीरो निमज्ज  
 मदिशपतीक्ष्णप्रादिनवंशरम् ॥ २६ ॥ विडः सङ्गं भोयेनाशुचुकोशमनिपुत्रकः ॥ २७ ॥ हाहाक  
 वकारिणा श्रेययोग्यजयोः पित्रोः पुत्रोऽहमिषुणाहतः ॥ २८ ॥ वनेमयि हतौ नूनं तावदाय  
 षिदाष्टिषु विषमेपथि किं करिष्यसि दामातः ॥ २९ ॥ कुरामिष्यसि दामातः ॥ ३० ॥ कष्टं कथम



देता है। इति श्रुतातिकरुणं मुनिस्तनोरहंवचः तेन प्रसागतेनैव स्वेन धाननदी  
 रणदारिते सरयूतटे नापशंकृतयत्नोपितं कृजेतमातरम् अथ शोकादिवापा  
 तशी निशाधंशेषु भ्रांशुकेशोवृद्धवोययौ ज्योत्स्नाप्रकटिते तीरेततो पश्य महं पु  
 नुशरेण मुनिपुत्रक विप्रकोणतदजटं नतनोद्भिन्नयौवनं कंदंतपतितं दृष्ट्वा तमहं व्य  
 रव विसृतनेत्रोमां विलोक्य पतितं शुचा उवाच सर्मविच्छेदव्यथा शिथिलिताक्षरं अहो व  
 मेव दत्तास्तथा अहमेधोवृद्धौ मे पितरावेकपुत्रकौ तदर्थं महमायातः समाहर्तमि  
 मस्तथा तौ तटघातौ किं करिष्यतः राजन् न जायि सम्पत्कं तं मम इव मेशरम सन्नासि  
 हमे मरणं मुनेः इति प्रलयतस्तस्य जीवितावाप्तचेतसा मया मन्त्रिवाभ्ये सह दया उड्ड  
 सायकेतसि न्यावृत्तनयनः अस्य व्यथां मयि विनिदिष्यदिनस्तथा जजीवितम् पूर्वं  
 हवनवत्सना जलजं मे समादाय प्रयातस्तपितः पदं तत्रांधौ दम्पती श्रुता तौ मेशां सुप  
 ० कं तौ गङ्गाक्षरमवतः विरेणागच्छता पुत्रभवता केलिश नना आन नवसंदे  
 ० पद्ये हियत दत्तास्तथापि संगे न संस्पृश न कोपितः कदाचित् ॥ १६ ॥ कथमाग



मानसलयादहम् उः सहंरुदिवाग्नं तहृतांतं नवेदयम् अहं दशरथः पा  
 पुत्रः सतेगजधियामयैव निहतः प्रियः अधना कोधनो वद्वि उस्मात्साधयामता  
 कायेरयेमनेसशीतलः इति क्रतैव गम्भीर उः एव स्वस्य इव द्वाणं मासवाचमनि  
 यतव्यतां सयमावेदने नैव पापस्यास्पृश्यवीचसः अज्ञानाश्च न ते यातं शिरः शतस  
 यचासौ शेते तद्वाणमारितः मम यष्टिश्च वक्षश्च जीवितं च प्रियः सतः तमहं दृष्टुमि  
 जोदितं प्राणः सम्प्रस्थिताः कापितं तं स्पृशः कृतः पुनः इति ब्रुवाणः समया नी  
 ते देशे यत्र तत्पुत्रः क्षामिवालिङ्ग्य संस्थितः उन्नम्य वदनं तस्य ममेतद्भ्रशमाकुला  
 वदेतीजन्मवासनाम् अहं ते जनकः पुत्रकिरकणस्यो गिरं अंधो हं कनयास्यामि  
 गतिं पुण्यकृतां वत्स परमां समवाप्तुमि तया सह वयोर्न नं विदिवे संगमः पुनः  
 निस्तनयवत्सलः शरीरमस्य सत्कृत्य क्रियां चक्रे निजोचिताम् ततो दिव्यवपुर्दि  
 तः उवाचो यत यन्वोमपि तरोमनि पुत्रकः सञ्जयैव युवयोः प्राप्तोऽस्मि गतिम्  
 त्वेरीदृशी भवितव्यता सकृत्तैः कर्मभिर्न तर्जयते परिवर्धते जीवते न प्रपति पु



देताहैत इत्युक्तांतर्हितेतस्मिन्नाहदमनिरभ्यधात अवश्यंरपभोक्तव्यं पापस्या  
कनमदतातमस्यस्यामिजीवितम् इत्युक्ताडः खितोदेहं सभार्योमनिरमजत  
जयंयत्तवधवर्णनम् सोयंममाद्यकौसल्येफलितः शापपादपः नदिनामचल  
ततिः सतः सन्निहितानितं शुभाशुभफलोदयाः तिष्ठेति पुरुषस्याये सद्गुणाः  
योगशोकाप्रितापक्षेपः सहिस्मवः प्राणास्तरलसंवाहः क्वापिगंतंममोयताः  
कामं कमललोचनः धन्यास्तंसिंहविक्रान्तं द्रव्यंति पुनरागतम् सीतैव धन्यागमस्य  
कीर्तिसमरुषस्यैव धृतिः सतवतो यथा हारा मनयनानंदस्वधासंदोहबांधव विल  
तया जगती पतिः स्वसंविताय नृपतिः कौसल्या शोकाप्रितापक्षेपः तन्निद्राक्षेदभीता  
पिनी प्रातः प्रबोधमानोपि सतमागधवंदिभिः दीर्घप्रवासरसिकः द्वापतिर्नैव्यु  
वासं प्रशांतमिव पावकं अपुनदंशनायैव ददर्शमहिजनः इति रामायणमंजयो  
प्रयातमालोकांतं राजरजनीपतिम् शोकांधकारसंरुद्धशुक्रं दंतः पुरेजनः कौ  
शमवशाननाः चक्ररक्तकण्ठोऽस्मिन् द्वायसताफलभ्रमम् सवालवृद्धललने



तकादयवसिष्टाद्याविविश्यसहसंविभिः तैलद्रोणविनिदिष्टपुत्रक्रियांति  
 राभरतायाशुगामिनः इति ते मेन्द्रकविविचितायां रासायणमंत्रयौ समाप्ता य  
 तेष्वेकैक्यपुरंदिनैरुतेष्वसमभिः स्वैरुबंधसभासीनो वयस्याभरतोभ्यधात सयानि  
 दृष्टोतिदारुणः फलेयस्याधिकं ममेजीविताधिकसंक्षयः शुक्लं समदमदाक्षं चंदं च  
 रुद्रामयोध्यां च कीर्णकेशामिवाङ्गनाम् गुरुशुशौलाशित्वरान्नयादृष्टः परिच्युतः  
 तैलमंजलिभिः पिवन् सपवचपुनर्दृष्टो लोहदृष्टो सितांबरः नारीभिः क्लृप्तपिंगा  
 दितः रथेन खरयुक्तेन रक्तमाल्यान्लेपनः पुनरा लोकितस्त्राणी प्रसर्पदक्षिणो  
 मः स्वमः परं हृदयकंपनः गंभीरसंशयाशंसी न जाने किं करिष्यति भरतेनेतिक  
 ताप्रपि उवर्धातविकाराणां समानामप्रमाणताम् तज्जिराकृतजप्योषसंपूजितस्त्र  
 यत्रैव च कम्पे स्वमदर्शनम् अशंतरे प्रविश्या सुहृतास्ते सहताशयाः वसिष्ठशासनं  
 न पितः सर्वत्र कुशलं ते मिष्टैव गवे दयन् निशम्यामं भरतो मातामहमपाययो  
 सहताहतः शत्रुघ्नसहितो वीरः प्रतस्थेन गंरी पितः समुत्तीर्य नदीः पुण्णानदीशौ



आददर्शादोयध्याविधताशयः विपदिवासितसखांसकज्ञानजनाननो ह  
 कोनामिवपमिनी निभेषाणांनिरानंदोविद्यायांविस्तृतस्मिताम् विधवामिवंता  
 लोभवत् अग्रियात्मानवकितैर्दृतः सर्वैरधोमुखैः राजधानीप्रविश्यायमातंमदि  
 ततत्रैकेकीपुत्रदर्शननिर्दृतां प्रणम्यराजलब्धातांपप्रच्छजनकोत्सकः मात  
 कस्मादापदोपदम् उग्रशोकग्रहग्रस्तश्चायंलक्ष्यतेजनः वेणवीणाम्बरालीन  
 म् यशःशुभ्रंरगादीभिकितातस्मन्योयते वेदिएणानामभिर्भूमिपालान्स्वयताशु  
 तशब्दस्तातस्यास्थानमंदिरे भरतेनेतभिहितकैकेयीप्रतिभासत यशोवशेषतोया  
 भस्व रामरामेतिबद्धशोविलप्यविवशोनिशि तस्याजजीवितंरजासहृददर्शना  
 सितलेननामरामःसलक्षणः सेहेनचातिधीरोपितद्वियोगविषयधाम इतिउः  
 देतोभरतस्तथा कृतःपरशुनामलेबालस्तालश्चापतत्र सलब्धंसंतःशनकैशुका  
 ततातेतिमद्गर्विललापास्तगद्गदः प्रसन्नयनेतमतिःस्वासश्रुपिताधरः सुनःप  
 दसागरे आर्येनकिंकृतंमातस्तान्स्वतविप्रियम् संसंयक्तः स्वयंयेनतेनले



तरकिंचित्कृतमार्येणपातकं अथवागमचरितेकलंककलनाकृतः एष्टासा  
यादिना तत्तजगादजननीसीभावसरलाशया तदर्थयाचितोराजामयारामवि  
चभवतस्सवततकृतवानकृती वरप्रधानसत्तेनबद्धस्यमविभयतेः चविष्णत्पात्रया  
ने क्रमेतिविप्रियेतराणिनिघमात्रानिवेदितां स्याकीगर्भसंभूतमिवात्मानममेस्त  
संतमःसजगत्सःस्वजीविते जीवयन्निवचित्राणिनिःआसप्रबलानिलौ वतपातकपे  
याणा भवत्पासेच्छयालिमंजुलमात्मायशंचमे जेष्टेतिवासितःपुरोदैवतंनिहृतःपतिः  
मदोयुक्तवयाकृतं कृतस्त्रयाकदाज्ञातोल्ब्यःपापोरुमीदृशः यस्यैशुरुवधादि  
सि द्वादिसंयतिनेपापेपापेनमहतादृतं यस्यापवादजननीजननीतमत्रपा धे  
कौसल्यायाःप्रियःस्तुतः कथंप्रभानितोराणंपुत्रिएणापिस्वयेतया गवांमाताप  
वादितौ दृष्ट्वाभूतौरुदातादृष्ट्वाप्रोवाचवर्जिणा कथौपुत्राविमौदृष्ट्वाभविक्ता  
नपराशीतिःपुत्रादन्यत्रदेहिनाम् इत्युक्त्वावद्गुत्रापिमुशोचसरभिःपुरा एक  
यमास्थिता तातस्माहंक्षयेहेतव्यशोधूलिधूसरः इत्यामिकथमार्यस्वात्स



प्रकरोदात्तलारंगभोरतिः स्वैः ऊर्वभवनकोणेषुगलतिंहागुदाप्रमम्  
लागवससव जगदाभेतिभरतंशत्रुः पतितंभवि सोब्रवील्लत्मणेनैवकतंस  
ः कीववसेदेराद्यवसविवासनम् प्रवथाजननीयोषिदात्महापापमश्रुते आर्यप्रवा  
प्रतिक्रिया कोपाउक्तेतिशत्रुविलोकाहारिमंथरा गुल्फदेशेसमादायचकर्षाकी  
त्पावदनेतसाविपुलपांसमुष्टिभिः संपर्चचकेनिष्पिष्टनरूपकताभुवम सेयंकिल्लि  
यमोमंही उक्तेतितांसतमाजविरेणशरणगताम्

75